an>

Title: Need to review policy on export of the meat of milch animals in the country.

श्री सत्यपाल सिंह (सम्भल) : धन्यवाद अध्यक्ष महोदया, आपके माध्यम से मैं किसानों एवं देश के हित की महत्वपूर्ण समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

भारत देश कृषि प्रधान देश है। 60 प्रतिशत आबादी कृषि आधारित रोजगारों पर निर्भर है। भारत की अर्थव्यवस्था की कृषि पर निर्भरता के कारण कृषि क्षेत्र में पशुधन के योगदान व भूमिका को समझना भी जरूरी है। देश में कृषि उत्पादन में पशुओं का महत्वपूर्ण योगदान है। गायों व बछड़ों के वध पर प्रतिबन्ध के बावजूद, किसी सक्षम तंत्र के न होने के कारण, पशु-वधशालाओं में लगातार वध हो रहा है। पशुधन का उपयोग दुग्ध उत्पादन में होता है।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : लम्बा-चौड़ा पढ़ना नहीं है।

श्री सत्यपाल सिंह : पशुधन का उपयोग दुग्ध उत्पादन में बहुतायत में रहा है, लेकिन दुग्ध उत्पादन के आंकड़े बिल्कुल विपरीत हैं। देश की स्थिति जैसी होनी चाहिए थी, वैसी नहीं है। लगातार आंकड़े बताते हैं कि वर्ष में प्रति गाय से लगभग 1100 किलो, प्रति भैंस से लगभग 1550 किलो दूध का उत्पादन होता है, जबकि बेसिक आंकड़ा प्रति गाय से लगभग 2300 किलो दूध उत्पादन का है। अमेरिका जैसे विकसित देशों में इस नस्ल की गाय 6000 लिटर दूध की है।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपकी बात हो गयी। आप जो मूल बात कहना चाहते हैं, उसे कहिए। एक्सपोर्ट नहीं करें क्या?

श्री सत्यपाल सिंह : महोदया, मैं आपके माध्यम से सरकार से आग्रह करना चाहता हूं कि मांस के निर्यात की नीति की समीक्षा करने के उपरांत मांस के निर्यात को प्रतिबन्धित करना चाहिए।